


---

saMskRitasya sevanaM saMskRitAya jIvanam

——  
संस्कृतस्य सेवनं संस्कृताय जीवनम्

——  
Document Information



---

Text title : saMskRRitasyasevanaM

File name : saMskRRitasyasevanaM.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc\_z\_misc\_general

Latest update : September 12, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose. Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.


**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**


---

September 12, 2019

*sanskritdocuments.org*

---



——  
संस्कृतस्य सेवनं संस्कृताय जीवनम्



संस्कृतस्य सेवनं, संस्कृताय जीवनम्  
लोकहितसमृद्धये भवतु तनुसमर्पणम् ॥ ध्रु ॥

कार्यगौरवं स्मरन् विघ्नवारिधिं तरन्  
लक्ष्यसिद्धिमक्षिसात् करोमि सोद्यमः स्वयम् ।  
यावदेति संस्कृतं, प्रतिजनं गृहं गृहं  
तावदविरता गतिस्तावदनुपदं पदम् ॥ १ ॥

कामये न सम्पदं भोगसाधनं सुखं  
किञ्चिदन्यदाद्रिये विना न संस्कृतोन्नतिम् ।  
गौरवास्पदं पदं, नेतुमद्य संस्कृतं  
बद्धकटिरयं जनो निधाय जीवनं पणम् ॥ २ ॥

भाषिता च वागियं भाषिता भवेद् ध्रुवं  
भाष्यमाणतां समेत्य राजतां पुनश्चिरं  
भरतभूमिभूषणं सर्ववाग्विभूषणं  
संस्कृतिप्रवाहकं संस्कृतं विराजताम् ॥ ३ ॥

- जनार्दन हेगडे

---

saMskRitasya sevanaM saMskRitAya jIvanam

pdf was typeset on September 12, 2019

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

